ठोक कर बारीक कर लें तथा इसे बोरों में भरकर छाँव में रख दें। इस प्रकार बने घन जीवामृत को आप 6 महीने तक भंडारण करके रख सकते हैं।

## घन जीवामृत को कैसे प्रयोग करे?

घन जीवामृत को हम किसी भी समय भूमि में डाल सकते हैं। खेत की जुताई के बाद इसका प्रयोग सबसे अच्छा होता है। जब हम भूमि में इसे डालते हैं तो नमी मिलते ही घन जीवामृत में मौजूद सूक्ष्म जीवाणु कोष तोड़कर पुनः अपने कार्य में लग जाते हैं। किसी भी फसल की बुवाई के समय प्रति एकड़ 100 किलोग्राम जैविक खाद और 20 किलोग्राम घन जीवामृत का प्रयोग करें। इससे बहुत ही अच्छे परिणाम देखने को मिलते हैं। इस के प्रयोग से आप रासायनिक खादों से भी ज्यादा उपज ले सकते हैं। बीज बोते समय बोने का जो औजार है उसमें दो नलियों का बाउल लगाएं। एक बाउल से बीज बोयें और दूसरे बाउल से यह जैविक खाद और घन जीवामृत का मिश्रण डाले या आपके इलाके में बीज बोने की जो भी विधि हो उससे ही इन दोनो की बुवाई करें।

## जीवामृत के प्रयोग से होने वाले लाभ

- जीवामृत पौधे को अधिक ठंड और अधिक गर्मी से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है।
- फसलों पर इसके प्रयोग से फूलों और फलों में वृद्धि होती है।
- जीवामृत सभी प्रकार की फसलों के लिए लाभकारी है।
- इसमें कोई भी नुकसान देने वाला तत्व या जीवाणु नहीं है। - पौधों में बिमारियों के प्रति लड़ने की शक्ति बढ़ाता है।
- मिट्टी में से तत्वों को लेने और उपयोग करने की क्षमता बढ़ती है।

- बीज की अंकुरण क्षमता में वृद्धि होती है।
- इससे फसलों और फलों में एकसारता आती है तथा पैदावार में भी वृद्धि होती है।

## जीवामृत का लगातार उपयोग भूमि पर क्या असर डालता है?

जीवामृत के लगातार प्रयोग करने से भूमि में केचुआ और अन्य लाभदायक सूक्ष्म जीव जैसे-शैवाल, कवक, प्रोटोजोआ व बैक्टीरिया इत्यादि में वृद्धि होती है जो पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते है।

## भूमि की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होती है।

भूमि के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों में भी इसके प्रयोग से सुधार होता है। जिससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है। जब हम भूमि में जीवामृत डालते हैं तब 1 ग्राम जीवामृत में लगभग 500 करोड़ जीवाणु डालते हैं। जीवामृत उपयोग में लाते ही इसके जीवाणु नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, लोहा, गंधक, जिंक आदि को पौधों की जड़ों को उपलब्ध करा देते हैं। भूमि पर जीवामृत डालते ही केंचुए भूमि के अन्दर लगभग 15 फट से खाद पोषक तत्वों से समद्ध मिट्टी मल के माध्यम से भमि की सतह के ऊपर डालते हैं, जिसमें से पौधे अपने लिए आवश्यक सभी खाद पोषक तत्व बड़ी ही सुलभता से चाहे जितनी मात्रा में ले लेते हैं। केंचुओं के मल में मिट्टी से सात गुना ज्यादा नाइट्रोजन, नौ गुना ज्यादा गंधक होता है। यानि फसलों और फल पेड़-पौधा को जो जो चाहिए वह प्रचुर मात्रा में होता है।

अधिक जानकारी के लिए सपर्क करे

**जिला कृषि पदाधिकारी**
**"आत्मा" लोहरदगा**



# जीवामृत

**जिला कृषि पदाधिकारी**
**"आत्मा" लोहरदगा**

हरितक्रांति के बाद से ही भारतीय खेती में जिस प्रकार रसायनिक उर्वरकों का अंधाधुन प्रयोग हुआ है उसने हमारी भूमि की संरचना ही बदल कर रख दी है। आज बहुत ही तेजी से खेती योग्य भूमि बंजर भूमि में बदलती जा रही है। खेतों में लगातार रासायनिक उर्वरक के प्रयोग से फसल की पैदावार पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए जैविक खेती को बढ़ावा देना समय की मांग है।

जीवामृत एक अत्यधिक प्रभावशाली जैविक खाद है, जिसे गोबर के साथ पानी में कई और पंदार्थ मिलाकर तैयार किया जाता है, जो पौधों की वृद्धि और विकास में सहायक है। यह पौधों की विभिन्न रोगाणुओं से सुरक्षा करता है तथा पौधों की प्रतिरक्षा क्षमता को बढाता है जिससे पौधे स्वस्थ बने रहते हैं तथा फसल की बहुत ही अच्छी पैदावार मिलती है। जीवामृत दो प्रकार के होते हैं।

1. तरल जीवामृत
2. घन जीवामृत

## तरल जीवामृत बनाने की विधि

तरल जीवामृत बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

1. देशी गाय का भी - कहते हैं। अगर पीपल या बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी न मिले तो खेत की मिट्टी प्रयोग की जा सकती है जिसमें कीटनाशक न डाले गए हों।

6. एक बड़ा पात्र (ड्रम आदि) - लगभग 200 लीटर

सभी सामग्री इकटठा कर सबसे पहले 10 किलोग्राम देशी गाय का गोबर, 10 लीटर देशी गौमूत्र, 1 किलोग्राम पुराना सड़ा हुआ गुड़ या 4 लीटर गन्ने का रस, 1 किलोग्राम किसी भी दाल का बेसन, 1 किलोग्राम सजीव मिट्टी एवं 200 लीटर पानी को एक मिट्टी के मटके या प्लास्टिक के ड्रम में डालकर किसी डंडे की सहायता से इस मिश्रण को अच्छी तरह हिलायें जिससे ये पूरी तरह से मिल जाये। अब इस मटके या ड्रम को ढक कर छांव में रख दें। इस मिश्रण पर सीधी धूप नही पड़नी चाहिए।

अगले दिन इस मिश्रण को फिर से किसी लकड़ी की सहायता से हिलाऐं 6 से 7 दिनों तक इसी कार्य को करते रहें। लगभग 7 दिन के बाद जीवामृत उपयोग के लिए बनकर तैयार हो जायेगा। यह 200 लीटर जीवामृत एक एकड़ भूमि के लिये पर्याप्त है।

विशेषज्ञ बताते है कि देशी गाय के 1 ग्राम गोबर में लगभग 500 करोड़ जीवाणु होते हैं। जब हम जीवामृत बनाने के लिए 200 लीटर पानी में 10 किलो गोबर डालते हैं तो लगभग 50 लाख करोड़ जीवाणु इस पानी में डालते हैं। जीवामृत बनते समय हर 20 मिनट में उनकी संख्या दोगुनी हो जाती है। जीवामृत जब हम 7 दिन तक किण्वन के लिए रखते हैं तो उनकी संख्या अरबों-खरबों हो जाती है। जब हम जीवामृत भूमि में पानी के साथ डालते हैं तब भूमि में ये सूक्ष्म जीव अपने कार्य में लग जाते हैं तथा पौधों को आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं।



## तरल जीवामृत को कैसे प्रयोग करे?

तरल जीवामृत को कई प्रकार से अपने खेतों में प्रयोग कर सकते हैं। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका है फसल में पानी के साथ जीवामृत देना। जिस खेत में आप सिंचाई कर रहे हैं उस खेत के लिए पानी ले जाने वाली नाली के ऊपर ड्रम को रखकर वाल्व की सहायता से जीवामृत पानी में डालें। धार इतनी रखें कि खेत में पानी लगने के साथ ही ड्रम खाली हो जाए। जीवामृत पानी में मिलकर अपने आप फसलों की जड़ों तक पहुँचेगा, इस प्रकार जीवामृत 21 दिनों के अंतराल पर आप फसलों को दे सकते हैं। इसके अलावा खेत की जुताई के समय भी जीवामृत को मिट्टी पर भी छिड़का जा सकता हैं। किसान भाई इस तरल जीवामृत का फसलों पर छिड़काव भी कर सकते हैं। फलदार पेड़ों के लिए दोपहर 12 बजे के समय पेड़ो की जो छाया पड़ती है उस छाया के बाहर की कक्षा के पास 1.0-1.5 फुट पर चारों तरफ से नाली बनाकर प्रति पेड़ 2 से 5 लीटर जीवामृत महीने में दो बार पानी के साथ दीजिए। जीवामृत छिड़कते समय भूमि में नमी होनी चाहिए। जीवामृत का प्रयोग किसान भाई गेहूँ, मक्का, बाजरा, धान, मूंग, उरद, कपास, सरसों, मिर्च, टमाटर, बैंगन, प्याज, मूली, गाजर आदि फसलों के साथ ही अन्य सभी प्रकार के फलदार पेड़ों में कर सकते हैं।

## घन जीवामृत

घन जीवामृत बनाने के लिए निम्नलिखित सामग्री की आवश्यकता होती है।

1. 100 किलोग्राम देशी गाय का गोबर
2. 5 लीटर देशी गौमूत्र
3. 2 किलोग्राम गुड़
4. 2 किलोग्राम दाल का बेसन
5. 1 किलोग्राम सजीव मिट्टी

ये सब सामग्री एकत्रित करके सबसे पहले 100 किलोग्राम देशी गाय का गोबर लें और उसमें 2 किलोग्राम गुड़ तथा 2 किलोग्राम दाल का बेसन और 1 किलोग्राम सजीव मिट्टी डालकर अच्छी तरह मिश्रण तैयार कर लें। इस मिश्रण में थोड़ा-थोड़ा गौमूत्र डालकर उसे अच्छी तरह मिलाकर गूथ लें ताकि उसका घन जीवामृत बन जाये। अब इस गीले घन जीवामृत को छाँव में अच्छी तरह फैलाकर सुखा लें। सूखने के बाद इसको लकड़ी से